IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छत्तीसगढी साहित्य में जनउला

डॉ. संगीता रंगारी
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
वीरांगना रानी अवन्ती बाई लोधी शासकीय कला
एवं वाणिज्य महाविद्यालय, रामाटोला
जिला – राजनांदगांव (छ.ग.)

शोधसार – भारत विविधताओं का देश है। यहाँ विभिन्न भाषा भाषायी लोग निवास करते है। उन्ही में से एक हमारा प्यारा छत्तीसगढ़ है। यहाँ लोक संस्कृति एवं परम्परा का विशेष महत्व है। समाज में लिखित एवं मौखिक दोनों ही प्रकार के साहित्य है। मौखिक साहित्य लिखित साहित्य से पुराना है। जब लेखन कला विकसित नहीं हुई थी तब वाचिक परम्परा द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी हस्तांतरित होकर वाचिक परम्परा अक्षुण्ण रही। इन्हीं मौखिक परम्परा में जनउला (पहलियों) का विशेष महत्व है। यहाँ "जनौला" का अगाध भंडार है। जनौला बौद्धिक व्यायाम एवं बुद्धिमानी का प्रतीक तथा मनोरंजन का एक साधन है, यही हमारी पारम्परिक सुविचारों का जीवन दर्शन भी है।

प्रस्तावना – भारतीय वाडगम्य में लोक प्रयोग प्राचीन काल से हो रहा है। छत्तीसगढ़ की लोक सांस्कृति अत्यंत समृद्ध एवं वैविध्यपूर्ण है। यह ऐसा राज्य है जहाँ लोकगीत, लोकनृत्य, लोकसंगीत, लोकनाट्य एवं लोकाचार की अकुत संपदा विद्यमान है। लोकसंस्कृति, लोकपंरपरा की घोतक है। यह परम्परा हमारे पूर्वजों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। यह हमें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को जोड़ने, भाईचारा के साथ रहने, समाज में सौहार्द्र बनाये रखने में अपनी महती भूमिका अदा करता है। लोक का आशय उस विशेष जन समूह से है जो प्रकृति के नैसर्गिक सौंदर्य को अपने लोक संस्कारों, साज–सज्जा, परिष्कार, परम्परा से आलोकित करती है।

लोकजीवन में लोकसाहित्य का समृद्ध भंडार अनेक स्वरूपों यथा लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकोक्तियों एवं पहेलियों के रूप में संरक्षित है। यह अभिजात्य वर्ग एवं शिष्ट समाज के पास मनोरंजन के महंगे किन्तु सदैव सुलभ साधन उपलब्ध है। लोकजीवन केवल मनोरंजन ही नही बल्कि जनरंजन के लिए भी अपने लोक साहित्य की निर्मल जलधारा में अवगाहन के लिए आश्रित है। लोक जीवन में जनरंजन का एक शशक्त माध्यम है। "पहेली"। यही पहेली छत्तीसगढ़ी में "जनउला" कहलाता है।

मनुष्य की भावनायें असीम सागर की भाँति है। भावनाओं के अनंत स्रोत्र में कुछ भावनाएँ सार्वजनिक होता है और कुछ भावनाएँ गुप्त होती है। जिसे सभी के सामने प्रस्तुत करना सम्भव नही हो पाता है। यही से गोपनीयता का जन्म होता है। मनुष्य अपनी जिज्ञासा की शांति और अपने साथ अन्य लोगों के बुद्धिमापन के लिए जिन गुप्त माध्यमों का आश्रय लेता है और अपनी भावनाओं को सार्वजनिक करता है, वही व्यवहार में "जनउला" अर्थात "पहेली" कहलाता है। मानव की अंतनिहित गोपनीयता के संबंध में डॉ. फ्रेजर ने लिखा है – "पहेलियो" की रचना उस समय हुई होगी जब कुछ कारणों को स्पष्ट शब्दों में किसी बात को कहने में परेशानी हुई होगी। कहने का तात्पर्य यह है कि यह "दुर्बोध कथन पद्धति" ही जनउला है। पहेली बुझने की परम्परा मानव जीवन और उसके विकास के साथ प्रारंभ हुई होगी जो आगे चलकर अवकाश के क्षणों में बुद्धि परीक्षण, बुद्धिज्ञान एवं मनोरंजन का साधन बन गई।

लोक जीवन में विविध मांगलिक आयोजन में पहेली बूझने की परम्परा है। गोंड प्रधान एवं बिरहोर जनजातियाँ जो कि म.प्र. में निवास करती है, वहाँ विवाह के समय पहेलियाँ पूछी जाती है, वही धान का कटोरा कहे जाने वाले छत्तीसगढ़ राज्य में लोकसाहित्य की पुण्य सरिता भी प्रवाहित होती रहती है। जहाँ लोकोक्तियाँ, लोकगीत, लोक कथाएँ, लोकगाथाएँ तथा पहेलियों की असंख्य लहरे निरंतर तरंगित करती रहती है। छत्तीसगढ़ी जनउला अर्थात "जान ओला" यानि सामने वाले का बुद्धि परीक्षण कर उसे जानना। दिन भर परिश्रम कर अपनी थकान मिटाने हो, चाहे कोई मांगलिक कार्यक्रम या रात्रि में दादा–दादी या नाना–नानी की गोद में, हास–परिहास तथा बुद्धि परीक्षण का यह सर्वाधिक सुलभ साधन है।

छत्तीसगढ़ में "जनउला" का वृहद संसार है। कई विषयों में यह प्रस्तुत किया जाता है। कोई वस्तु आँखों के सामने हो और उनका सुंदर काव्य के रूप में लोकजन उसे गाकर प्रस्तुत करता है–

घुनुर–घुनुर जाता बाजे, सनबाई सुल्ताना।
फर उपर फूल फूले, तेखर उपर दू पाना।

अर्थात फल के ऊपर फूल लगे है और उस पर दो पत्ते भी है। यह कल्पना लोक की हो सकती है। इसका उत्तर है – "कुमहीभाजी" जिसके फल पर दो सफेद फूल एवं दो पत्तियाँ लगी होती है। छत्तीसगढ़ी जनउला सरल होने के साथ–साथ कभी क्लिष्ट भी होता है। छत्तीसगढ़ी जनउला में घर में उपयोग की जाने वाली वस्तुओं, मानवीय, अंगों, प्रकृति, पशु–पक्षी आदि पर समाहित है।

1. **घरेलु संबंधी जनउला –** घरेलु संबंधी अर्थात घर में उपयोग की जाने वाली वस्तुओं पर भी कई तरह के जनउले छत्तीसगढ़ी में विद्यमान है। उदाहरण –

नदिया के तीर तीर चल बोकरा,
पानी अंटागे मर बोकरा

इस पहेली में पूजा पठन में उपयोग किए जाने वाली वस्तु अर्थात दिया और बाती से है। अर्थात उक्त पहेली का जवाब दिया और बाती है।

एक अन्य उदाहरण –

एक सिंग के बोकरा, मेरेर–मेरेर नरियाय
मुंह डाहर ले चारा चरे, बाखा डाहर पगुराय।

उक्त पहेली किसी वस्तु को सुलझाने वाली उपमानो से निर्मित चित्रावली है, जिसमें बताया गया है कि बकरा एक सिंग का है, जो आवाज करता है, मुँह से चारा चरता है और बाजू से पागुट अर्थात जुगाली भी करता है। उक्त पहेली का जवाब है जांता।

2. खेती संबंधी जनउला – छत्तीसगढ़ कृषि प्रधान राज्य है। श्रम करना यहाँ की पहचान है। यहाँ श्रम की पूजा की जाती है। श्रम ही इनका आराध्य एवं साध्य है। यहाँ पुरूष तो पुरूष महिलाएँ भी कृषि कार्य करने में अग्रणी भूमिका का निर्वाह करती है। अतः लोक जीवन में कृषि से संबंधित जनउला भी प्रचलित है –

ये रे एक टांग का ये रें चार टांग

दू टांग कहाँ गेहे रे ? दस टांग मारे बर।

उपरोक्त जनउला का उत्तर चतवार, बाघ, किसान एवं केकड़ा है। इस संबंध में बुजुर्ग बताते है कि एक किसान एक बार अपना चतवार लेकर खेत गया। खेत जंगल के पास ही था। बाघ को पास आते देखकर किसान चतुराई से चतवार को जमीन में गाड़कर छुप गया। बाघ चतवार के पास आकर खडा हुआ और बाघ ने चतवार से किसान के बारे में क्रोधित होकर पूछा कि ये रे एक टांग, तो चतवार ने भी कड़क कर कहा कि – क्या है रे चार टांग, बाघ ने फिर पूछा – दो टांग अर्थात किसान कहाँ है ? चतवार ने कहा कि दस टांग को मारने। चतवार की बात सुनकर बाघ सोचता है कि जब वह दस टांग वाले को मार सकता है तब मैं तो चार टांग वाला हूँ। यह सोचकर बेचारा बाघ दुम दबाकर भाग निकला। यहाँ दस टांग का अर्थ केकड़े से है। इसे संख्या वाचक श्रेणी में भी रखा जा सकता है जिसमें वैज्ञानिक तथ्य छुपे हुए है। इसी तरह खेती संबंधी एक अन्य उदाहरण –

खोडोर–खोडोर खोड़री, छैः आँखी तीन बोड़कीं।

उक्त जनउला का अर्थ है हल चलाता हुआ किसान। हल में जुते हुए बैल एवं किसान की छः आँखे एवं तीन नाभियाँ है।

3) मानवीय अंगो संबंधी जनउला – छत्तीसगढ़ी जनमानस में मानवीय अंगो से संबंधित जनउला भी जनमानस में अत्यधिक मात्रा में विद्यमान है ये पहेलियाँ मनुष्य की जिज्ञासा एवं कोतूहल को जगाने तथा उत्तर देकर मानसिक संतुष्टी का प्रयास करता है। इस तरह ये पहेलियाँ अत्यधिक चमत्कारिक तथा प्रभावशाली होती है।

उदाहरण –

तरी पचरी उपरपचरी

बीच में मोंगरी मछरी

उक्त जनउला का उत्तर है दाँत और जीभ।

एक अन्य उदाहरण –

भरका उपर सुरका, सुरका उपर जोगनी

जोगनी उपर पहाड़, पहाड़ उपर राई, राई उपर चिरई

अर्थात उक्त जनउला पहेली में मनुष्य की मुख की आकृति के सम्पूर्ण अंगो का चित्रण है। भरका अर्थात मुंह, सुरका अर्थात नाक, जोगनी अर्थात रोशनी(आँख), पहाड़ अर्थात मस्तक, राई यानि बाल और राई ऊपर चिरई अर्थात चिड़िया का आशय (जूँ) से है।

4) भोज्य पदार्थ संबंधी जनउला – भूखे भजन न होत गोपाला अर्थात पेट में कुछ न हो यदि हम भूखे रहे तो कोई कार्य सफलतापूर्वक नही कर सकते है अर्थात भोजन ग्रहण करना हमारी आवश्यकता है। छत्तीसगढ़ को चूँकि धान को कटोरा कहा जाता है। धान की प्रजातियाँ बहुतायत होती है। इसलिए यहाँ चावल की चीजे ज्यादा बनाई जाती है। लोक जीवन में प्रयुक्त दैनिक भोज्य पदार्थ में जनउला के विषय भी है। फल एवं फूल व अन्य भोज्य पदार्थ को भाव व संकेत द्वारा व्यक्त कर पहेली का रूप देते है उदा. –

पीपल के बट लोही, लोहा के ढंकन
तेखर भीतरी, तीन ठन पखना।।

उक्त जनउला का उत्तर है – तेंदु। किंतु इसका उत्तर जानना कठिन है। पकने पर तेंदू का रंग पीला होता है अर्थात वह पीतल की बटलोही हुई। उसके ऊपर काले रंग का ढंकना लगा रहता है, और वह लोहा है। फल के अंदर तीन बीज होते है जो पत्थर है।

उदाहरण – 1. डबरा मताय हस, कि करार आदगें हस

उत्तर – बासी भात

2. तरिया पार में फट–फीट, तेकर गुदा बड़ मिठ।

उत्तर – नरियर (नारियल)

3. छिये में गुज–गूज चाबदिस दाई, बडा जन बू बू।

उत्तर – मिरचा

4. हरियर भाजी, साग में न भात में, खाय बर सुवाद में

उत्तर – पान

5. बिना पानी के, उज्जर सूत

उत्तर – दूध

एक अन्य उदाहरण है –

जडमत ददा, बेलासादाई
फूलमत बहिनी गोदल्ला भाई

व्यंग्य से परिपूर्ण इस पहेली को सुनकर हँसी छूटती है। हास–परिहास से परिपूर्ण इसका उत्तर – मखना अर्थात कुम्हड़ा है।

5) पशु–पक्षी से संबंधित – ग्रामीण लोकजीवन में पशु पक्षियों के साथ उनका आत्मीय सहचर्य होता है। लोगों के कार्यो में पशुओं की उपयोगिता गाँवों में अनिवार्यतः बनी रहती है। पशु पक्षी ग्रामीण जीवन के सहयोगी है, यही कारण है कि लोक साहित्य में पशु–पक्षियों की उपस्थिति बनी रहती है।

उदाहरण –

बिना पाँव के अहिरा भैय्या, बिना पाँव के गाय।

अइसन चरित्तर हम देखेन, खारन–खार कुदाय

उक्त जनउला में अहिर यानि ग्वाला सर्प है और गाय है मेंढक, जिसे सर्प खाने के लिए पकडने दौड़ाता है।

अन्य उदाहरण –

1. दुरूग के डोकरी,
   पाछु डाहर मोटरी
2. अत्थर ऊपर पत्थर
   पत्थर ऊपर दू पइसा
   बिन पानी के महल बनावै।
   यह कारीगर कैसा।

उक्त जनउला में ऐसा कारीगर की अभिव्यंजना की गई है जो बिना पानी के महल का निर्माण कर लेता है। अर्थात दियार यानी "दीमक"। हैं न विचित्र जनउला, जो मस्तिष्क का कसरत कराने के लिए उपयोगी सिद्ध होते है।

6. प्रकृति संबंधी जनउला – प्रकृति ही जीवन है और मनुष्य प्रकृति पर ही निर्भर है। प्रकृति से कुछ भी परे नहीं है। लोकजीवन तो पूरी तरह से प्रकृति पर आश्रित है, और जीवन में प्रकृति स्पंदित होती रहती है। इसलिए जनउला में प्रकृति के विभिन्न रूप दिखायी देते है।

उदाहरण – मैं रांधे न मैं राधेंव चुर कईसे गीस ?

तै खाये न मै खायेव सिरा कईसे गीस ?

उक्त जनउला में वर्णित है कि न तुमने खाना पकाया, न मैंने खाना पकाया फिर भी खाना तैयार हो गया। न मैंने खाया न तुमने, खाया फिर भी वह खाना समाप्त हो गया। दिमाग की तार्किकता को मजबूत करने वाला यह जनउला। इस प्रकार देखते है कि जनउला का वृहद एवं समृद्ध संसार है। इस जनउला का उत्तर "करा" अर्थात "ओला" है।

7. अन्य जनउला – छत्तीसगढ़ी के विषय अनेक एवं अद्‌भुत है।

जैसे – अड़गड़ उपर बड़गड़, बड़गड़ उपर डोर

गाय बछरू ल छोड़ के, कोठा ल लेगे चोर।

उत्तर – मधुमख्खी।

जीवात्मा संबंधी उदाहरण –

बिना पाँख के सुवा, उड़त जाय अगास।

रूप रंग न ओखर, भूख मरे न पियास।

उक्त जनउला का हल इस प्रकार है कि जीवन अर्थात आत्मा जिसका कोई रंगरूप नही होता है और न ही उसे भूख और प्यास लगती है। जीव आत्मा अजर अमर है।

शोध का उद्देश्य – लोकसाहित्य में जनउला (पहेली) का विहंगम दृश्य को प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधि – पुस्तकालयीन पद्धति का प्रयोग।

निष्कर्ष – छत्तीसगढ़ का मौखिक साहित्य काफी विस्तृत है। यह मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने का कार्य करता है। तथा एक दूसरे को सुनकर एवं सुनाकर आपसी माधुरिक तारम्यता को स्थापित करते है। मौखिक परम्परा समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध होता है, जो अनंत काल तक जीवित रहता है। छत्तीसगढ़ी जनउला का भंडार असिमित एवं अगाध है। आवश्यकता है उसे अपनी वाणी एवं व्यवहार से सुरक्षित एवं संरक्षित रखने की। छत्तीसगढ़ी जनउला लोक साहित्य की अनमोल धरोहर है जहाँ हमारा लोकजीवन हँसता, गाता और मनोरंजन करता है। यह जनउला मनोरंजन के साथ–साथ तार्किकता, बौद्धिक व्यायाम, बुद्धिमान तथा मनोरंजन का साधन है, यही हमारे लोकविचारों, परम्पराओं, संस्कारों के साथ–साथ हमारे जीवन दर्शन का दर्पण भी है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. डॉ. हनुमंत नायडू, छत्तीसगढ़ी लोकगीत, 2011, आर. बी. सिंह,
   विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर.
2. डॉ. दयाशंकर शुक्ल, "छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन".
3. छत्तीसगढ़ी लोक जीवन और लोक साहित्य का अध्ययन – शकुंतला वर्मा.